पाठ 12. पिता जी का कमरा

पाठ का उद्देश्य

प्रस्तुत पाठ का उद्देश्य बालमन की उस चंचलता और व्याकुलता को प्रदर्शित करना है, जो प्रत्येक बच्चे के मन में होती है, जब उनका मित्र पहली बार उनके घर पर आ रहा होता है। प्रत्येक बच्चा यह चाहता है कि उसका मित्र उसके स्वागत-सत्कार तथा घर की साज-सज्जा से प्रभावित होकर उसकी प्रशंसा करे। यह बच्चों की स्वाभाविक आदत होती है।

पाठ का सारांश

स्वामीनाथन का मित्र राजम शाम को उसके घर पर आ रहा है। यही सोचकर स्वामीनाथन उत्साह से भरा हुआ है और राजम के स्वागत की तैयारी करने में लगा है। उसने अपना कमरा साफ़ किया मगर फिर भी वह उसे नहीं जँचा। राजम के खाने को लेकर स्वामीनाथन अपनी माँ से अच्छी-अच्छी चीज़ें बनाने के लिए कहता है। स्वामीनाथन पिता जी से उनका कमरा राजम को बिठाने के लिए माँगता है। स्वामीनाथन के पिता जी कुछ हिदायत देते हुए उसे अपना कमरा दे देते हैं। राजम के आने पर स्वामीनाथन उसका अच्छी तरह स्वागत करता है। राजम द्वारा यह पूछने पर कि तुम्हारा कमरा कहाँ है, स्वामीनाथन गोल-मोल जवाब देता है। स्वामीनाथन राजम को अपनी दादी से भी मिलवाता है। स्वामीनाथन राजम को बाहर दरवाज़े तक छोड़ने जाता है। इस प्रकार मित्र के स्वागत को लेकर की गई तैयारियाँ सफल हो जाती हैं।

अध्यापन संकेत

पाठ पढ़ाने से पूर्व पाठ की ओर ध्यान दिलाने के उद्देश्य से बच्चों से पूछें कि क्या वे अपने मित्रों के घर जाते हैं या उन्हें अपने घर बुलाते हैं। यदि बुलाते हैं तो वे उनका स्वागत कैसे करते हैं आदि। उन्हें बताएँ कि अब हम जो पाठ पढ़ेंगे, उसमें एक बालक अपने मित्र को अपने घर बुला रहा है।

पाठ का आदर्श वाचन करें। बच्चों से पूछें तथा समझाएँ–

- ❖ मित्र के घर आना-जाना उन्हें कैसा लगता है।
- ❖ क्या वे भी स्वामीनाथन की तरह अपनी माँ से मित्र के लिए कुछ अच्छा बनाने के लिए कहते हैं।
- ❖ समझाएँ कि घर पर कोई भी मेहमान आएँ उनका आदर करना चाहिए।
- ❖ जब किसी के घर जाएँ तो उनकी वस्तुओं को उनसे पूछें बिना नहीं उठाना चाहिए।
- ❖ अपने माता-पिता की बातें माननी चाहिए।

डिजीडिस्क (DigiDisc) के माध्यम से पाठ की ई-बुक विद्यार्थियों को दिखाकर पाठ के प्रत्येक अंग का स्पष्टीकरण कीजिए। गतिविधियों की दुनिया से परिचय भी कराइए।